

१४
८

र पुणेदन च धतापय, जे, हाविषा ने, ५
आता न १० द आदने, ५५ पुणेदन, ५
तिल माषा न १० माशादन ५ विहादन

१०४ नवग्र अर्थ सुति

आशा मरुति

ADNA ARCHIVES

2992

१४
८

ह पुणेन च धनपय, जे. हाविषा ने. ५
होत न. ८. द. ५. द. ५. ५. ५. ५. ५. ५.
तिस माषा न. ५. ५. ५. ५. ५. ५. ५. ५.

१८४ नवग्र अर्थ सुति

आचार्य अर्थ सुति	2992	
ADMA ARCHIVES		

रुद्रागोलायनमः॥ ॥ श्रीशुद्धाभवाणीपीत
ये॥ श्रीभैरवयेनमः॥ ॥ नारद उवाच॥ ॥
पुनर्देत्यं

जातः स प्रतिथौ विसाष भयु ते देवै क
लिगाय के गोत्रं यस्य व का स्य पे यमु
दि तं प्रीति गुदा ने धिका॥ वं द्विपुत्र

धि देव तं जल रुद्र रुद्र ते तथा क्षत्रि
यं सोयं मंगल मात नो तु स वि ता त्रै लो
क्य दी पो नितं ॥ १ ॥ जातः स्त्री र पयो निधा
व निलमे रुद्रे गिरा शै ति थो । अत्रियं खलु
यस्य गोत्र मम लं प्री ति धृ ते पा य मे । तो य प्र
त्य धि देव तं कर त ले वं ति शो यं क जं सोयं
शं भु शिरो मणि मव तु म भदा य चं डो मु दा ॥ २ ॥

पञ्चविंशतः

वर्णयत्यत्र त्रियं प्रकृतिं तन्नातो दसं म्याति
थौ । तोयर्क्षे ह विरेवा दने षो भिरति
जोत्रं । भरदा जकं । भूमि प्रत्यधि
दैव । तोरुन रुचिर्मया प्रदे सोद्
व । तोयं । त्यद्म धालो कलो तु य तत्तं
सन्मं गलं मं गलः ॥ ३ ॥ ज्ञातो यो दशमति
थौ भुवि मले अक्षे धने षा ह्ये आत्रे यं

खलु यत्पगोत्रं मन्त्रिका प्रीतिशु श्रीरोदने ।
तिरागभं स मुद्रवो भयवर् हस्ते हृदये रूपा
भूते विष्टु प्रत्यधि देवतं कनक भवं वर्ण च वैश्या लम्क
कुष्माकं विदधातु मागध भवो स दु द्वि हृदि
दुःखः ॥ ४ ॥ जान ८ ॥ आत्तर फागु सिमस हिते विश्वे
तिथो शैव्ये गोत्रं चागिर स द्विचातिरधि का प्रीतिं च
दथो दने य सन्द प्रविदैवतं निगदिनं ह दश्चतु
माये

शुभतस्तयवोविदधानकनिभोजीवश्चिरं
जीवता॥ ५॥

ॐ कूं कूं कूं कूं कूं कूं ॥ इति करारुत्यापः ॥ जलपाशा
घ्नपापप्रजापतशुभं ॥ भावाहनादि ॥ त्रिदेव
साधारदि ॥ पञ्चासनायनमः ॥ मेकासनायनमः
ध्यानं ॥ रक्तमास्याम्वरवरः शक्तिश्चलगडाधराचतु
र्भुजो मेघनमोवरदः स्याद्भरासुतः ॥ ॥ नवग्रहादि
प्रजा ॥ ॥ अशुभलः ॥ ॐ कूं कूं कूं कूं ॥ अंगारायपाद
कं ॥ वलिधरपदीपध्वजं ॥ विजति ॥ अतिजन्मानि

पूर्वसाठासमुद्रवः ॥ भारद्वाजकुमारश्च मंगलायनमो
मुते ॥ ॥ अममभौमनामेकविंशतिकस्य पुत्रापति
अधिः पृथ्वी छन्दः धरात्मजो देवता सर्वापद्विनिवार
गे जये विनियोगः ॥ ॐ कूं कूं कूं कूं ॥ ॥ मंगलोश्रमि
पुत्रश्च अगहर्ता धनपदः ॥ स्थिरासनो महाकायो स
र्वकर्मो वरो धकः ॥ लोहितो लोहिताक्षश्च सामगा
नोरुपाकरः ॥ धरात्मजः कुजो भोतो अग्निदो अग्निन
दनः ॥ अंगारकोयमथैव सर्वरोगापहारकः ॥ हृष्ट
कर्तो पहर्ता च सर्वकामफलपदः ॥ ॥ उतातिउजना

पुरातनसंगारस्तोत्रं

मा. वि. नि. तं. य. पु. य. त. प. ठ. त. अ. ए. न. जा. य. ते. त. त्प. ध.
 तं. पा. प्रो. ति. पु. क्क. लो. र. क्क. गं. धै. शु. पु. से. शु. ध. प. दा. पा. दि.
 मि. ल. था. मं. ग. ले. ज. ज. ये. ड. क्का. मं. ग. ले. रु. नि. स. र्न. दा. ॥
 अ. ए. रे. सा. पु. क. र्त्त. वा. अं. गा. रे. ल. स. दा. व. धै. प्रो. य.
 ये. ह्ना. म. पा. दे. न. अ. ए. ना. शो. न. वि. ध्या. ति. ॥ ए. वं. क्क. लो.
 त. स. दे. रु. अ. ए. ल्प. क्का. ध. न. ल. ये. त. ए. क. विं. श. ति. ना.
 मा. नि. ज. तु. र्थ. ते. न. पू. ज. ये. त. ध. र. मा. ग. र्भ. स. र्भ. र. त.
 वि. शु. ज्ञे. ज. स. म. प्र. र्भ. कु. मा. रे. श. क्रि. ह. स्त. च. मं. ग. ले.

पु. ए. ना. म्प. ह. ॥ इ. ति. क्क. न.

ॐ नमो नवगुहाय ॥ ॥ थ व थ व स न र्घ वि य
न त्त नं ॥ न त्त मा नि क ॥ धा तु ता म ॥ न दि त् य
या ॥ ॥ प र्श्व हि मु षा यः ए ड प द् क लिं
जा द त्सा ए वा य स प्रं म्यां आ गा य वि सा र्वा

न द प्रा य का स्य प गा प्रा यः क ठी आ ता यः न क
व र्ना यः हि तं न्या स उप त्रि षेः स वि ता द व ता य त्रे
सु प द् न्द स न्ना दि त्या यः ॐ श्च ना यः न रि पु
ते पि त्द व ता यः ॐ द म र्घी ग हा न स्या द्हा ॥ व द

॥ आकाश त्यादि ॥ सोम ॥ बन्धु कपुष्य सं ॥ माः रक्ता
त्परसमप्रमंला कना ॥ था जग दीप ॥ संतिंय
द्वंतिमास्कर ॥ १ ॥ सोमयार नृमुती ॥ रजत ॥
वीरसमुद्रोमवायः कस्रवतु र्दस्यांजातायः ॥

कतिकानक्षत्रायः आत्रये गोत्रायः वैत्यजातायः
स्वेतवर्नायः गोतमः ऋषयेः गायत्री हृन्दः सोमा
यः उमायः आपपुत्यपि देवतायः इदमर्घ्यं गृहा
नस्याह ॥ वेद ॥ इमं देवाः ॥ सोम ॥ हिमसंषम

अथ ३

नालांभं का लपुष्प नित्यापि वा सप्तांकारो दिशी भ
र्ता सदा सांतिं प्रयच्छतु ॥ २ ॥ अंगारया रत्नपुर
तामु ॥ मयि दे स्वभवाय दसंभ्यां जाताय पुर्वाषाद
नक्षत्राय भारद्वाज गोत्राय सत्रीरक्तवर्नाय विरु

पाक्षत्राय अंगालदेवत्ये त्रैलोक्ये अंगारय
सदाय सिति प्रत्यधि देवताय इदमर्घ्यं गृहा
न स्वाहा ॥ वेद ॥ अग्निर्मुर्धा ॥ सोत्रा ॥ धरणी गर्भ
संभुतं वंशु जीवनी सः पुमः ॥ सांतिं ददातु वेनि

आम मरुति
AMG ARCHIVES

2992

यदेति त्वयं तिथिं सत्तान्तरम् उरोपार्जितोक्तं
पुनरुक्तं मां। पु काशी हर्षे वान्ते रो न प्रवेत्तुने
प्रयं व्यापयित्वा जातवै॥॥ मन्त्रे माता वासुदेवे रत्नमर्क
मुनिर्भव वा मुनि विमलेश्वरः। वकारात्त्वत्तं गन्तुं माया।
कश्चिन्मन्त्रे नोपयुक्तं करेति॥॥ पुनरुक्तं पुनरुक्तं
रत्नमर्क
श्रीलक्ष्मीपुत्राय नमः। श्रीलक्ष्मीपुत्राय नमः।
मदाशे विमलेश्वरः। मदाशे विमलेश्वरः।
मोक्षकलेश्वरः। मोक्षकलेश्वरः।

त्यं कुमारो सारक ४५ दा ॥ ३ ॥ बुद्ध्या रत्न वैदुष्यं स
वर्त्त ॥ मध्यं देसो मवाय नवं म्यां जाताय ॥ यनिष्ठ न
क्षत्राय ॥ अत्रिय गोत्राय ॥ वैश्य जाताय ॥ पीतवर्त्ताय ॥
बुधः प्रथमः ॥ गायत्री छन्दसे ॥ बुधय नाराय नाय ॥ वि
ष्णु प्रत्यक्षि देवताय ॥ इदमर्घ्यं गृह्णान स्वाहा ॥ वेदा ॥

सप्त २

उर्वुध्य स्वाग्ने ॥ सोत्रा ॥ रेहिणि गर्भसंभुतः ॥ कर्त्तृका
र ॥ पत्तः ॥ सोमपुत्रो मरुतेजोबुधः ॥ शान्तिप्रयश्च
तु ॥ ४ ॥ ब्रह्मस्यतिया ॥ सूरवर्ण रत्नपुष्पराग ॥ सिन्धुदे
शो ॥ इवाय ॥ एकादशी जाताय ॥ उत्तरफाल्गुणि न
क्षत्राय ॥ श्रुतिरस गोत्राय ॥ ब्राह्मन जाताय ॥ पी

तवर्नायः जमदग्निः ऋषयेः वृहस्पतिदेवतयेः त्रै
 लुपुच्छसेः वृहस्पतयेः ब्रह्मणेः ऐन्दुपुत्र्य
 ऋदेवतायः इदमर्थं गृह्णानस्याह ॥ वेद ॥ वृ
 हस्पतये ॥ सोत्र ॥ सिम्वलीकलीकाकारः सुभो
 जायुः प्रदेविभुः देवमंत्रिमहातेजोः गुरु

भार्गवगोत्रं

ॐ नमो

सातिप्रयच्छतु ॥ पा ॥ शुक्रयारत्रहेलरजत ॥ भो
 देसो भवायः नवम्यां तातायः पूषानक्षत्रायः वां ह्य
 नजाजायः स्वेतवर्नायः वसिष्ठः ऋषयेः शुक्रदेवता
 यः गायत्री छन्दसेः शुक्रायः सक्रायः सवीन्दीपुत्र्य
 ऋदेवतायः इदमर्थं गृह्णानस्याह ॥ वेद ॥ अत्र
 त्यरी ॥ सोत्र ॥ काशकुंदेशसंकाशः शुक्रवर्नवि

सुड व र्णा य ३

मुषितं ॥ प्राप्तिददातु वीनीत्यैत्यमंत्रिसमागव
॥ ६ ॥ सनिश्चरयारत्नइन्दुनिललोह ॥ सौराष्ट्रदेसोद
भवाय असंम्यांजाताय रोहिणी नक्षत्राय कास्य
पगोत्राय हरितवर्णाय कास्यपञ्चषये सनिश्च
रदेव त्वे जायत्री छन्दसे सनिश्चराय यमाय

प्राजापत्यविदेवताय इदमर्घ्यं गृह्णान स्वाहा
॥ वेद ॥ सन्ने देवी ॥ स्तोत्र ॥ नीलोत्पलस्यामो ॥ ६ ॥
मित्राजननिभोपिवा सनैश्चर गृह ४ पूर्वा सदा
सांतिं पुयच्छतु ॥ १ ॥ राहयारत्नलाङ्ग तसिसा ॥ मं
लं यैष वृत्ति भवा ॥ पूर्वमास्यां जाताय भलनीणा
विनादिता य

॥
त्रा ॥ य ॥ प ॥ थी न ॥ गो ॥ त्राय ॥ सु ॥ दु ॥ ज्ञा ॥ ता ॥ य ॥ नी ॥ ल
व ॥ र्ना ॥ य ॥ वा ॥ म ॥ दे ॥ व ॥ म ॥ ष ॥ ये ॥ रु ॥ दु ॥ दे ॥ व ॥ त्ते ॥ गा ॥ य ॥ त्रि
छं ॥ द ॥ से ॥ रा ॥ ह ॥ वे ॥ का ॥ रा ॥ य ॥ स ॥ र्च ॥ पु ॥ त्र ॥ य ॥ धि ॥ दे ॥ व ॥ ता ॥ य
॥ इ ॥ द ॥ म ॥ र्च ॥ ग ॥ द ॥ न ॥ स्वा ॥ हा ॥ वे ॥ द ॥ ॥ क ॥ या ॥ न ॥ श्रि ॥ त्र
॥ सो ॥ त्रा ॥ अ ॥ सी ॥ पू ॥ ष ॥ स ॥ र्च ॥ का ॥ सो ॥ नी ॥ रा ॥ ज ॥ न ॥ स ॥ मे

पि ॥ वा ॥ सां ॥ तिं ॥ द ॥ दा ॥ तु ॥ के ॥ नि ॥ त्यं ॥ रा ॥ ह ॥ ज ॥ न्द्रा ॥ क ॥ म
॥ द ॥ ने ॥ ॥ ६ ॥ ॥ के ॥ तु ॥ या ॥ र ॥ न ॥ क ॥ के ॥ न ॥ न ॥ कां ॥ सो ॥ ॥ श्री
प ॥ र्ब ॥ तो ॥ म ॥ वा ॥ य ॥ अ ॥ मा ॥ वा ॥ र्णा ॥ ज्ञा ॥ ता ॥ य ॥ अ ॥ स्त्रे ॥ ष
न ॥ क्ष ॥ त्रा ॥ य ॥ जै ॥ म ॥ नी ॥ गो ॥ त्रा ॥ य ॥ सु ॥ दु ॥ ज्ञा ॥ ता ॥ य ॥ ॥
मु ॥ व ॥ र्ना ॥ य ॥ वि ॥ श्वा ॥ मि ॥ त्र ॥ म ॥ ष ॥ ये ॥ गा ॥ य ॥ त्रि ॥ छं ॥ द

सिंकेतवे वित्रजु प्राय बुद्ध्यापुत्र्यधिदेवता
य इदमर्थं गृह्णान स्यात् ॥ वेदा ॥ केतुं कं नो ॥ सि
त्र ॥ सिंदुररुचिराकारो रक्तपद्मनिभो पि
वा ॥ केतुं वै रक्तनेत्रां गो ॥ सदा सान्तिं पुय छुत्तु
॥ त ॥ जन्मपारत सुवन ॥ ॥ १ सदे सो भवा

यस्य वेलां जाताय स्वने क्षणाय स्वस्याधिपतये ॥ १ ॥
नेषां शिष्यभिमुप्राय ॥ स्वेतवर्णाय सप्तक्रपये ॥ दि
रं न्याय ॥ आतमापुत्र्यधि देवताय ॥ जन्मने ॥ स
प्तमपिभ्यो ॥ हिरं न्यागर्भपुत्र्यधि देवताय ॥ इ
दमर्थं गृह्णान स्यात् ॥ वेदा ॥ ता अस्य त्यादि ॥ सि

त्रौ॥ वन व्याप ता ने रे वं॥ किर्ति तां ते न वृणु हा॥
सांतिं ददा तु वे नित्यं॥ सर्वेषां मपि सर्व दा॥ १९॥
॥ इति न वृणु ह अर्घ्य सुति स मा त सी पू र्ण ॥ ॥
श्री गणेशाय नमः॥ नमो सु ते ते ज म यं स्वरूपं पु सी द
तां वि स्व स म स व्या प्तं॥ नमो न म सूर्य भा र्क रूपं॥ तां वि स्व

व्या प्तं॥ ज ग तां स कर ति हं त्री म॥ १ ॥ श्री भी मे स्वराय
॥ भी म रूपं मा हा ते जं॥ स त्रु सं हार कार णं॥ कराल दु
ष्टा व द नं॥ महा का ला गि त्वा च नं॥ १ ॥ ल ग्न ध नु ल
सूर्य मेष व च न्द्र मा श नि श्च र मि थु न ३ ध नु मी
ग ल्ग ल मी ने ७ ध व १२ वृ ह स्प ति रा हु नु ता ७ मेष
के ९ १